बालिका ने उत्तर दिया—नहीं, दूध क्यों—डाकृर ने तो बेदाना रस के लिए कहा था न ?

मलिना की आँखें छलछला उठीं। छोटी बहिन से अपना दुःख छिपाने के लिए वह बाहर जाने लगी।

इसी समय मकान के बन्द दरवाज़े को खोलकर एक वृद्धा ने अन्दर प्रवेश किया। दबे हुए स्वर में उसने पूछा—अनू कैसी है, मलिना ?

आँसू पोंछते हुए वृद्धा के पास जाकर मलिना ने कहा—हालत अच्छी नहीं है, छटपट कर रही है—मेरी अनू कभी इतनी अशान्त तो न थी, मौसी !

कहते कहते मलिना का स्वर फिर रुँधने लगा। वृद्धा ने कहा—रोग की यन्त्रणा सहते सहते एक मास हुआ चाहता है। बच्ची है, प्राण भी कितना सा होगा ? उसका क्या दोष है, बेटी ? वह जाग रही है क्या ?

रुद्ध स्वर में मलिना ने कहा—हाँ।

वृद्धा ने अनू के पास जाकर उसके ऊपर झुकते हुए कहा—बेटी अनू, माँ दुर्गा ने तेरे लिए कैसे अच्छे कपड़े भेजे हैं, देखो!

अनू के रोगक्लान्त पीले मुख पर ईषत् आनन्द की लालिमा झलमला उठी। उसकी निष्प्रभ आँखों में हर्ष की ज्योति प्रकट हुई। उसने पूछा—कहाँ है, मौसी ?

वृद्धा ने गुलाबी रंग का चौख़ाना कपड़ा निकालकर उसे अनू को दिखलाया।

अनू ने रोने के स्वर में कहा—यह क्या ? मैं उस मकान के गोपाल की तरह के ज़रीदार कपड़े लूँगी।

कमला ने कहा—वैसे कपड़े बाज़ार में नहीं हैं, अनू ! सब बिक गये हैं।